14

परमेश्वर का न्याय

अन्यजातियों के लिए: *''परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। इसलिए कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों में प्रगट है। क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है। क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं। इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उनका निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया ... । वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं, कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले मृत्यु दण्ड के योग्य हैं, तौ भी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं, वरन करने वालों से प्रसन्न भी होते हैं'' (रोमियों 1:18-32)।*

''फिर जब अन्यजाति लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, तो व्यवस्था उनके पास न होने पर भी वे अपने लिए आप ही व्यवस्था हैं। वे व्यवस्था की बातें अपने-अपने हृदयों में लिखी हुई दिखाते हैं और उनके विचार परस्पर दोष लगाते, या उन्हें निर्दोष ठहराते हैं'' (रोमियों 2:14, 15)।

यहूदियों के लिए: *''सो हे दोष लगाने वाले, तू कोई क्यों न हो; तू निरुत्तर है! क्योंकि जिस बात में तू दूसरे पर दोष लगाता है, उसी बात में अपने आप को भी दोषी ठहराता है, इसलिए कि तू जो दोष लगाता है, आप ही वही काम करता है। और हम जानते हैं, कि ऐसे-ऐसे काम करने वालों पर परमेश्वर की ओर से ठीक-ठीक दण्ड की आज्ञा होती है। और हे मनुष्य, तू जो ऐसे-ऐसे काम करने वालों पर दोष लगाता है, और आप वे ही काम करता है; क्या यह समझता है, कि तू परमेश्वर की दण्ड की आज्ञा से बच जाएगा?'' (रोमियों 2:1-3)।*

सब के लिए: *''और क्लेश और संकट हर एक मनुष्य के प्राण पर जो बुरा करता है आएगा, पहिले यहूदी पर फिर यूनानी पर। पर महिमा और आदर और कल्याण हर एक को मिलेगा, जो भला करता है, पहिले यहूदी को फिर यूनानी को'' (रोमियों 2:9, 10)।*

''इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। परन्तु उसके

अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित्त ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहिले किए गए और जिन की परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की; उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे। वरन इसी समय उस की धार्मिकता प्रगट हो; कि जिस से वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे, उसका भी धर्मी ठहराने वाला हो'' (रोमियों 3:23-26)।

न्याय के दिन परमेश्वर द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कारों तथा दण्डों पर विचार करने के बाद, हम पूछ सकते हैं, ''इस सब में परमेश्वर का न्याय क्या है? क्या वह लोगों को पृथ्वी पर उनके छोटे से जीवन के लिए सदा तक पुरस्कार या दण्ड देकर न्याय करेगा? वह किसी दुष्ट को जीवन के अन्त में मन फिराने का पुरस्कार क्यों देगा?'' लूका 15 अध्याय वाले उड़ाऊ पुत्र के बड़े भाई ने सोचा था कि उसका भाई, जिसने दुष्ट जीवन बिताया था, पिता की दया का अधिकारी नहीं है (आयतें 25-30)। हम पूछ सकते हैं, ''यदि परमेश्वर उसकी किसी 'छोटी सी' शर्त को न मान पाने के कारण किसी को अनन्तकाल के लिए दण्ड देता है तो क्या यह उसका न्याय है?''

बहुत से लोग इस बात से परेशान हैं कि क्रोध और कठोर दण्ड को परमेश्वर के प्रेम, करुणा और अनुग्रह से कैसे मिलाया जा सकता है। जैसे इसे परमेश्वर का प्रेम ही उसे क्रोध करने के लिए भड़काता है। शायद इससे बात बहुत अधिक सरल हो जाती है। परन्तु क्या हम उन्हें जो हम से प्रेम करते हैं और जिनके लिए हमने बलिदान किए हैं, ठुकराकर क्रोध से बच सकते हैं? परमेश्वर को जलन रखने वाला परमेश्वर कहा गया है (देखें निर्गमन 20:5; यहोशू 24:19; यहेजकेल 39:25; 1 कुरिन्थियों 10:22)। उसके प्रेम का अर्थ उसकी जलन है क्योंकि उसकी जलन ही उसे क्रोध करने को विवश करती है; और उसका क्रोध उसे दण्ड देने को। ''यहोवा जल उठने वाला और बदला लेने वाला ईश्वर है; यहोवा बदला लेने वाला और जलजलाहट करने वाला है; यहोवा अपने द्रोहियों से बदला लेता है और अपने शत्रुओं का पाप नहीं भूलता'' (नहूम 1:2)।

हमें यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि परमेश्वर पिता है, जिस कारण वह कठोर निर्णय लेने वाला न्यायी नहीं होता या यीशु मेमना है और वह शेर नहीं हो सकता। हम पवित्र आत्मा के कबूतर की नाईं होने पर विचार कर सकते हैं, पर हमें यह संदेह नहीं करना चाहिए कि वह भस्म करने वाली आग हो सकता है। सुसमाचार (अर्थात ''खुशखबरी'') बताता है कि परमेश्वर ने किस प्रकार अनन्त दण्ड से बचने के लिए हमारे लिए मसीह के द्वारा मार्ग उपलब्ध करवाया है।

ज़्या स्वर्ग और नरक का कोई हकदार नहीं है?

क्या भयंकर पापियों को बचाकर परमेश्वर ''न्यायी'' ठहरेगा? यदि परमेश्वर कठोर न्याय के आधार पर काम करे, तो हम में से कोई भी बचाया नहीं जाएगा! हम जानते हैं कि

''सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' (रोमियों 3:23; 3:9, 10; 1 यूहन्ना 1:8, 10 भी देखें)। अपने पापों के कारण, हम सब दण्ड के अधिकारी हैं। कोई भी स्वर्ग में अनन्त जीवन पाने का अधिकारी नहीं है। हम अपना उद्धार अपने आप उपलब्ध नहीं करा सकते (इफिसियों 2:8, 9); अकेला यीशु ही हमें बचा सकता है (प्रेरितों 4:12)। याद रखें कि परमेश्वर का न्याय हमारे पापों के दाम के रूप में मृत्यु की मांग करता है (रोमियों 6:23)। यीशु की मृत्यु ने (कुलुस्सियों 1:19-22) परमेश्वर के न्याय को पूरा कर दिया है (रोमियों 3:25) और सारे संसार के लिए क्षमा उपलब्ध करा दी है (1 यूहन्ना 2:2)। यीशु ने हमें पापों से छुड़ाकर (प्रकाशितावाक्य 1:5) अनन्त उद्धार उपलब्ध कराया है (इब्रानियों 5:8, 9)।

आइए परमेश्वर के न्याय के बारे में कुछ कठिन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करते हैं:

(1) ''यदि कोई व्यक्ति जीवन भर दुष्ट रहा हो, परन्तु अन्तिम सांस लेने से पहले बदल जाए, तो क्या ऐसे व्यक्ति को बचाकर परमेश्वर धर्मी ठहरेगा?'' मानवीय तर्क तो कह सकता है कि परमेश्वर यदि ऐसा करता है तो, ''प्रभु की चाल ठीक नहीं'' है (यहेजकेल 33:17)।

> ''... दुष्ट की दुष्टता भी जो हो, जब वह उस से फिर जाए, तो उसके कारण वह न गिरेगा; ... फिर जब मैं दुष्ट से कहूं, तू निश्चय मरेगा, और वह अपने पाप से फिरकर न्याय और धर्म के काम करने लगे, अर्थात यदि दुष्ट जन बन्धक फेर दे, अपनी लूटी हुई वस्तुएं भर दे और बिना कुटिल काम किए जीवनदायक विधियों पर चलने लगे, तो वह न मरेगा।
>
> ''... और जब दुष्ट अपनी दुष्टता से फिरकर न्याय और धर्म के काम करने लगे, तब वह उनके कारण जीवित रहेगा'' (यहेजकेल 33:12-19)।

पौलुस और लूका 15 अध्याय वाला उड़ाऊ पुत्र परमेश्वर की ओर से दी जाने वाली क्षमा का अच्छा उदाहरण हैं, क्षमा एक दान है जिसे हम अधिकार के रूप में नहीं पा सकते। क्योंकि यह यीशु की मृत्यु पर आधारित है, न कि इस बात पर कि हम ने परमेश्वर के लिए कितना भला किया है (इफिसियों 2:8, 9), वह बिना इस बात का ध्यान किए कि किसने कितनी देर तक सेवा की है, अपनी शर्तों के आधार पर किसी को भी उद्धार देकर धर्मी ठहरा सकता है।

(2) ''यदि कोई व्यक्ति जीवन भर धर्मी रहा हो परन्तु अन्त में वह पापी हो जाए, तो क्या उसे दण्ड देकर परमेश्वर धर्मी ठहरता है?'' यहेजकेल को परमेश्वर ने बताया था:

> जब धर्मी जन अपराध करे तब उसका धर्म उसे बचा न सकेगा; ... तब उसके धर्म के कामों में से किसी का स्मरण न किया जाएगा; जो कुटिल काम उसने किए हों वह उन्हीं में फंसा हुआ मरेगा (यहेजकेल 33:12, 13)।
>
> जब धर्मी अपने धर्म से फिरकर कुटिल काम करने लगे, तब निश्चय वह उन में फंसा हुआ मर जाएगा (यहेजकेल 33:18)।

यदि कोई अपने आप को पाप के लिए दे, तो उसने परमेश्वर के अनुग्रह का द्वार बन्द कर दिया है। केवल यीशु का लहू ही पापों को क्षमा कर सकता है। क्षमा परमेश्वर को दिए हमारे व्यक्तिगत उत्तर के आधार पर दी जाती है।

(3) ''किसी व्यक्ति को जिसके पास मसीह के द्वारा उद्धार को जानने का कोई तरीका न हो, सदा के लिए दण्ड देकर क्या परमेश्वर धर्मी ठहरता है?'' बाइबल इस प्रश्न का उत्तर स्पष्ट नहीं देती। इसलिए हम वचन से मिले संकेत से ही अपने निष्कर्ष निकाल सकते हैं। यीशु ने कहा, ''यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में मरोगे'' (यूहन्ना 8:24)। क्या यीशु अपनी इस पुष्टि में उन लोगों को भी शामिल कर रहा था, जो उसके बारे में नहीं सुनेंगे? इसका अर्थ यही होना चाहिए कि सभी लोग इसमें आते हैं, क्योंकि जगत का एकमात्र उद्धारकर्त्ता यीशु ही है (यूहन्ना 14:6)। निश्चय ही परमेश्वर के लिखित प्रकाशन के लाभ के बिना, लगता है कि यीशु में विश्वास करने का लोगों के पास कोई अवसर नहीं है; क्योंकि विश्वास परमेश्वर के वचन से आता है (रोमियों 10:17; यूहन्ना 17:20, 21; प्रेरितों 17:11, 12)।

पुराने युग अर्थात पुरानी वाचा के काल में, परमेश्वर लोगों का न्याय उसी व्यवस्था के अनुसार करता था, जिसके वे अधीन थे। अन्यजातियों के विषय में, पौलुस ने लिखा है, ''जिन्होंने बिना व्यवस्था पाए पाप किया, वे बिना व्यवस्था के नाश भी होंगे?''; ''फिर जब अन्यजाति लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, तो व्यवस्था उनके पास न होने पर भी वे अपने लिए आप ही व्यवस्था हैं'' (रोमियों 2:12, 14)। यदि किसी ने अभक्तिपूर्ण जीवन ऐसे बिताया हो जैसे परमेश्वर हो ही न, तो उसके लिए कोई बहाना नहीं; क्योंकि परमेश्वर के होने का उसके पास पर्याप्त सबूत था (रोमियों 1:18-20) और नैतिक नियम भी (रोमियों 2:14)। इस अन्तिम युग अर्थात मसीही काल में, पौलुस ने कहा है कि ''परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है'' (प्रेरितों 17:30, 31)।

जी उठने के बाद यीशु ने अपने प्रेरितों को ग्रेट कमीशन अर्थात महान आज्ञा दी, जिसमें शेष समय के लिए सारे संसार को शामिल किया गया: ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मरकुस 16:15, 16)। पौलुस के अनुसार, परमेश्वर ने उद्धार की अपनी सामर्थ सुसमाचार में दे दी है:

> क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिए, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। क्योंकि उस में परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से, और विश्वास के लिए प्रकट होती है; जैसा लिखा है, कि विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा (रोमियों 1:16, 17)।

इस कारण, पौलुस ने उन्हें, जिन्होंने सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानी, चेतावनी दी कि वे नाश होंगे। यीशु के लौटने पर, उसके सामर्थी स्वर्गदूत उन लोगों को जो परमेश्वर को नहीं जानते और जिन्होंने हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं माना है ''पलटा देंगे'' (2 थिस्सलुनीकियों 1:8)।

पतरस ने कहा, ''अब मुझे निश्चय हुआ कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, वरन हर जाति में जो उस से डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है'' (प्रेरितों 10:34, 35)। कुरनेलियुस को उद्धार की आवश्यकता थी (प्रेरितों 11:14) यद्यपि वह परमेश्वर का भय रखने वाला और भक्तिपूर्ण नैतिक जीवन बिताने वाला व्यक्ति था (प्रेरितों 10:1, 2)। इसलिए परमेश्वर ने पतरस को उसके पास सुसमाचार सुनाने के लिए भेजा, ताकि वह उसे मानकर मसीही बन जाए।

इन सभी आयतों के प्रकाश से यह स्पष्ट है कि संसार के हर ज़िम्मेदार व्यक्ति को सुसमाचार की बात माननी और उसके अनुसार जीवन बिताना आवश्यक है। कोई भी, जो किसी भी कारण से इस आज्ञा का पालन नहीं करता, धर्मी और पवित्र परमेश्वर के हाथों में है। स्पष्टतया स्वर्ग के इस ओर हर मसीही का आत्मिक दायितत्व है कि वह हर पापी को नरक के इस ओर रखने के लिए सुसमाचार सुनाए। शायद यह प्रश्न कि ''क्या ऐसे व्यक्ति को, जिसने सुसमाचार को न सुना हो, सुसमाचार को न मानने पर दण्ड देकर परमेश्वर धर्मी ठहरेगा?'' हमारे लिए इतना बड़ा है कि हम इसका उत्तर नहीं दे सकते, क्योंकि हम सब लोगों के मनों या सब लोगों की परिस्थितियों को नहीं जानते। हम परमेश्वर का धन्यवाद कर सकते हैं कि वह हमारा और सब लोगों का न्याय करेगा। हम न्याय नहीं करेंगे; बल्कि हमारा न्याय किया जाएगा। इसलिए आइए हम अपना फर्ज पूरा करते हुए सब लोगों से सुसमाचार की बात मानने का आग्रह करें जो उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है, दृढ़तापूर्वक विश्वास करते हुए कि सारी पृथ्वी का न्यायी सब लोगों का धर्म से न्याय करेगा (उत्पत्ति 18:25)।

क्या अनन्त दण्ड न्यायपूर्वक है?

अनन्त दण्ड के न्याय का मूल्यांकन हम किसके मानक से करें? पापी होने के कारण, हमें पाप की घोरता की समझ नहीं है। हो सकता है कि हमें यह दिखाई न दे कि पाप किसके लिए है। आखिर इसमें हम और दूसरे लोग ही नहीं, बल्कि परमेश्वर के साथ हमारा निजी सम्बन्ध भी आता है। पाप के साथ हमारी पहचान इसकी भयंकरता हमारे अहसास को खत्म कर देती है। पाप कठोर दण्ड के योग्य है, क्योंकि इसके द्वारा हम अशुद्ध होते और परमेश्वर के स्वभाव से रह जाते हैं (रोमियों 3:23), जो हमारा मानक है (1 पतरस 1:15, 16)। बिना क्षमा पाए, हम परमेश्वर के पाप रहित स्वर्ग से बाहर ही रहेंगे (2 पतरस 3:13; प्रकाशितवाक्य 21:27)।

हम पाप से प्रेम कर सकते और उसमें आनन्दित हो सकते हैं, परन्तु परमेश्वर को इससे घृणा है (इब्रानियों 1:9)। कुछ लोग कहते हैं कि परमेश्वर पाप से घृणा करता है, परन्तु पापी से प्रेम करता है। एक अर्थ में, यह सही है; परन्तु परमेश्वर पापी को पाप से

अलग नहीं करता है। यदि वह ऐसा करे तो उसका क्रोध और दण्ड पाप पर ही होगा, पापी पर नहीं। परमेश्वर का क्रोध तो पापी पर बहाया जाता है (देखें यूहन्ना 3:36; रोमियों 1:18; इफिसियों 5:6; कुलुस्सियों 3:6; 1 थिस्सलुनीकियों 2:16)। परमेश्वर पाप को वैसे नहीं देखता, जैसे हम देखते हैं।

इससे कुछ प्रश्न पैदा हो जाते हैं: क्या हम यह बताने के लिए सक्षम और योग्य हैं कि पाप का सही दण्ड क्या है? क्या हम पाप को वैसे ही देख सकते हैं, जैसा यह वास्तव में है? क्या हम पाप को वैसे ही देखते हैं, जैसे परमेश्वर देखता है? क्या हम पाप के न्यायोचित दण्ड के बारे में परमेश्वर के दृष्टिकोण को समझ सकते हैं? क्या हम अपने संसार के आगे पाप के प्रभाव को समझ सकते हैं, परमेश्वर के साथ व्यक्ति के सम्बन्ध तथा उसकी इच्छा के विरुद्ध परमेश्वर के विचार पर डालता है? यदि हम पाप की घोरता को देख नहीं सकते तो हम इसके दण्ड को सही कैसे ठहरा सकते हैं?

पाप की घोरता और परमेश्वर के दण्ड की कठोरता उन मामलों में देखी जा सकती है, जहां परमेश्वर ने दण्ड सुनाया। मृत्यु, कष्ट, बीमारी, हृदय रोग और हज़ारों और समस्याएं हम पर आदम और हव्वा के पाप के कारण पड़ीं। परमेश्वर ने एक छोटे से, सीधे से लगने वाले कार्य के परिणाम सदियों से लोगों को देकर उस कार्य की गम्भीरता को दिखाया है। हमें यह गलत लग सकता है, परन्तु हम परमेश्वर की इच्छा के प्रति बगावत की गम्भीरता को गलत नहीं ठहरा सकते। वह बदलता नहीं है (मलाकी 3:6), बल्कि "कल और आज और युगानुयुग एक-सा है" (इब्रानियों 13:8)। उसके पिछले न्यायों से अनन्त दण्ड की तुलना की जा सकती।

कुछ लोगों का मानना है कि परमेश्वर की इच्छा का पृथ्वी पर इतनी कम अवधि तक उल्लंघन करने से कोई अनन्त दण्ड का अधिकारी नहीं होतो। हमारे न्यायालयों में भी, दण्ड की अवधि या कठोरता किए जाने वाले अपराध की समय अवधि से तय नहीं होती। दण्ड किए जाने वाले अपराध की गम्भीरता के आधार पर तय होता है।

अनन्त दण्ड के बारे कुछ अवलोकन किए जाने आवश्यक हैं:

(1) उल्लंघन के दाम के रूप में जो किया जाना आवश्यक है, वह इस बात का संकेत है कि उसकी दृष्टि में जो न्याय को संतुष्ट करने की इच्छा करता है यह अपराध कितना गम्भीर है। परमेश्वर की पाप का दाम चुकाने के लिए अपने पुत्र को क्रूर क्रूस पर चढ़ाने की शर्त (1 पतरस 2:24; 3:18) इस बात का संकेत है कि परमेश्वर की दृष्टि में पाप कितना गम्भीर है। यदि परमेश्वर ने अपने न्याय को संतुष्ट करने के लिए अपने पुत्र को मरने भेज दिया, तो निश्चय ही न्याय की परमेश्वर की अदालत में अनन्त दण्ड बेतुका नहीं है।

(2) अनन्त दण्ड अनुचित लगता यदि बचने के मार्ग के रूप में परमेश्वर इतना बड़ा उद्धार उपलब्ध न कराता (इब्रानियों 2:3)। हमारे उद्धार के लिए प्रेम के ऐसे बलिदान को ठुकराने का अर्थ परमेश्वर के क्रोध को भड़काना ही हो सकता है (यूहन्ना 3:36)।

(3) क्योंकि परमेश्वर ने एक विकल्प अर्थात वह मार्ग उपलब्ध करवा दिया है, जो हमने कमाया नहीं है और जिसके हम अधिकारी नहीं हैं, इसलिए यह हमारी इच्छा पर निर्भर

है कि हम दण्ड से बचना चाहते हैं या नहीं। कोई भी, जो जीवन का जल नि:शुल्क पीना चाहे पी सकता है (प्रकाशितवाक्य 22:17)। परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन या अनन्त दण्ड में से एक को चुनने का विकल्प दिया है (मत्ती 7:13, 14; 25:46)। हमारा भविष्य हमारी पसन्द पर आधारित होगा, न कि परमेश्वर की पसन्द पर। वह नहीं चाहता कि हम में से किसी का नाश हो, बल्कि चाहता है कि सब अनन्त जीवन पाएं (2 पतरस 3:9)। यदि परमेश्वर ने हमारे लिए अनन्त दण्ड चुना होता और हम उसके योग्य न होते, तो वह अन्यायी ठहरता। परन्तु उसने हमें चुनने का अधिकार दिया है और इसमें परमेश्वर का न्याय दिखाई देता है।

(4) अनन्त दण्ड हमारे उन लोगों के मनों की स्थिति के कारण ठहराया गया है, जिन्हें परमेश्वर दण्ड देगा। शैतान और उसके दूत शायद कभी न बदलें, यानी वे विद्रोही मन के रहें, जिस कारण उन्हें अनन्त दण्ड देना न्यायोचित होगा। जो लोग अनन्त दण्ड के लिए उनके साथ जाएंगे (मत्ती 25:41) उन्होंने भी अपने मनों को कठोर कर लिया है। ''पर अपनी कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके क्रोध के दिन के लिए, जिस में परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने निमित्त क्रोध कमा रहा है'' (रोमियों 2:5); ''और बाकी मनुष्यों ने जो उन मरियों से न मरे थे, अपने हाथों के कामों से मन न फिराया, कि दुष्टात्माओं की, और सोने और चांदी, और पीतल, और पत्थर, और काठ की मूर्तों की पूजा न करें, जो न देख, न सुन, न चल सकती हैं'' (प्रकाशितवाक्य 9:20)। परमेश्वर का पलटा लेने की पौलुस की अभिव्यक्तियों से सब लोगों को अपने मार्गों से मन फिराने के लिए सचेत हो जाना चाहिए, परन्तु सब परमेश्वर के आगे समर्पण करने को तैयार नहीं हैं। बाइबल उन कुछ लोगों की बात करती है, जो गिर जाएंगे: ''उन्हें मन फिराव के लिए फिर नया बनाना अनहोना है'' (इब्रानियों 6:6)। क्या नरक में जाने वाले लोग परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए जाने वाले दण्ड का विरोध कर अपने मनों को कठोर बनाए रखेंगे? हम पढ़ते हैं कि सब लोग ''परमेश्वर पिता की महिमा के लिए ... अंगीकार'' करेंगे कि ''यीशु मसीह ही प्रभु है'' (फिलिप्पियों 2:11)। क्या इसका अर्थ यह है कि सब लोग मन फिरा लेंगे? ''दुष्टात्मा भी विश्वास रखते और थरथराते हैं'' (याकूब 2:19)। उन्होंने यह कहते हुए यीशु का अंगीकार किया था ''तू परमेश्वर का पुत्र है'' (मरकुस 3:11; 5:7 भी देखें)। अंगीकार करने का अर्थ आवश्यक नहीं कि मन फिराव ही हो। यदि ऐसा होता तो इन दुष्टात्माओं ने अंगीकार करने पर मन भी फिराया होता। स्पष्टतया उन्होंने मन नहीं फिराया था।

ज़्या अच्छी खबर है?

इस पाठ में शुभ समाचार यह है कि परमेश्वर ने यीशु के द्वारा नरक की पीड़ा से बचाव का रास्ता सम्भव बना दिया है, यदि हम इसे मान लें (इब्रानियों 5:9)। कोई भी जो उद्धार पाना चाहता है, इसे स्वीकार कर सकता है (प्रकाशितवाक्य 22:17)।

अपने प्रेम, अनुग्रह तथा करुणा के कारण परमेश्वर हमें अपने पापों के लिए कष्ट में नहीं रहने देना चाहता, बल्कि उसने हमारी असहाय स्थिति में हमारे लिए सहायता उपलब्ध करवाई है (रोमियों 5:6-8)। ऐसा उसने हमारे पापों के लिए यीशु की मृत्यु के द्वारा किया

(यूहन्ना 3:16; रोमियों 3:24; 11:32)। यह अच्छी खबर, अर्थात सुसचार हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर का योगदान है।

हम इस अच्छी खबर का लाभ उठा सकते हैं, यदि हम सुसमाचार पर विश्वास करके इसकी आज्ञा मानें (रोमियों 1:16; 2 थिस्लुनीकियों 1:8; 1 पतरस 4:17)। इसमें अपने पापों से मन फिराना (2 पतरस 3:9), यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार करना (रोमियों 10:9, 10) और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेना शामिल है (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:38; 1 पतरस 3:20, 21)। यदि हम ऐसा करते हैं तो हमारे पाप यीशु के लहू के द्वारा (कुलुस्सियों 1:19-22; प्रकाशितवाक्य 1:5) धोए जाएंगे (प्रेरितों 22:16)। बाद में नये जन्म तथा नये जीवन के कारण, हमें उसके ''सम्मुख पवित्र और निष्कलंक और निर्दोष बनाकर उपस्थित'' किया जाएगा, यदि हम ''विश्वास की नींव पर दृढ़ बने'' रहें ''और उस सुसमाचार की आशा को'' न छोड़ें (कुलुस्सियों 1:22, 23)। परमेश्वर ने हमें अवसर दिया है। हमें अनन्त दण्ड से बचने के लिए अनन्त जीवन को चुनना आवश्यक है।

सारांश

न्याय की हमारी समझ के लिए अनन्त दण्ड का विचार घृणात्मक हो सकता है, परन्तु परमेश्वर ने यही प्रतिज्ञा की है और यह उसके स्वभाव के अनुकूल है। प्रेमी परमेश्वर के रूप में, उसने अपने अनुग्रह के द्वारा नाशवान लोगों को, जो इसके अधिकारी नहीं थे, स्वर्ग में अपने साथ अनन्त जीवन की आशा दी है। हम सुसमाचार की बात मानकर उसके साथ रहने या सुसमाचार की आज्ञा न मानकर शैतान और उसके रूपों के साथ अनन्तकाल तक रहने में से किसी को भी चुन सकते हैं। परमेश्वर ने हमें चुना है। शैतान ने भी हमें चुना है। हम परमेश्वर या शैतान दोनों में से किसी एक को चुन सकते हैं। हमारा अनन्त भविष्य हमारे द्वारा चुनी गई पसन्द पर आधारित होगा।

मृत्यु के हमारे द्वार पर दस्तक देने या यीशु के वापस आ जाने पर हम अनन्तकाल और परमेश्वर के सामने होंगे। आपका अनन्त भविष्य क्या होगा?